M.M.A. College Bahera Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - I Paper - II

Page No. 1
Date 23.07.2020

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

कागज उद्योग

प्राचीन काल में भारत संस्कृति तथा साहित्य के क्षेत्र में विश्व का गुरु माना जाता था। यहाँ पर तालपत्रियों, पाड़पत्रों व भोजपत्रों को लिखने के लिए काम में लाया जाता था। कागज का प्रयोग इस देश में अधिक पुराना नहीं है ऐसा अनुमान है कि भारत में कागज बनाने का काम मुस्लिम शासनकाल में प्रारम्भ हुआ है।

1) उद्योग का विकास - भारत में आधुनिक ढंग का पहला कागज का मिल 1870 में कोलकाता के निकट हुगली नदी पर बाली नामक स्थान पर स्थापित किया गया। इसके बाद 1881 में टीटागढ़ नामक स्थान पर पश्चिमी बंगाल में टीटागढ़ पेपर मिल स्थापित किया गया जिससे अपना उत्पादन 1884 में प्रारम्भ किया। इस मिल के पश्चात लखनऊ में अपर इण्डिया पेपर मिल तथा रानीगंज में बंगाल पेपर मिल स्थापित किये गये। ग्वालियर (मध्य प्रदेश) व पूना में भी कागज के मिल स्थापित किये गये, लेकिन वे सफल न हो सके। प्रथम विश्वयुद्ध के काल में विदेशी कागज आयात करने में कठिनाई होने के कारण इस उद्योग को अपना विकास करने का अवसर मिल गया। युद्ध के पश्चात सहारनपुर में स्टार पेपर मिल, जगाधरी में गोपाल पेपर मिल व राजमहेन्द्री में कर्नाटक पेपर मिल स्थापित किये गये। इस प्रकार 1925 में कागज मिलों की संख्या 9 व उनकी उत्पादन क्षमता 33 हजार टन हो गयी। इसी वर्ष इस उद्योग को संरक्षण भी दे दिया गया। इससे इस उद्योग की स्थिति में सुधार होने लगा तथा विकास किया जाने लगा इस संरक्षण की अवधि समय-समय पर बढ़ायी जाती रही और अन्त में 1947 में इस उद्योग का संरक्षण समाप्त कर दिया गया। धीरे-धीरे मिलों की संख्या व उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ती गयी। 1936 में देश में 13 कागज मिल थे तथा उनकी उत्पादन क्षमता 53 हजार टन थी। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर भारत में 16 कारखाने थे तथा उनकी उत्पादन क्षमता 90 हजार टन थी।

योजनाओं में उद्योग की प्रगति - योजनाकाल में कागज के उत्पादन के लिए नये-नये मिल स्थापित किये गये व पुरानों को अपना विकास करने का अवसर दिया गया। इस काल की एक विशेषता यह रही कि कई मिल जैसे (NEPA) की स्थापना नेपानगर (मध्यप्रदेश) व सिरपुर पेपर मिल, होशंगाबाद प्रमुख है।